तिक-पट्ठान

संक्षिप्त रूपरेखा

(मूल पालि, भाषानुवाद, समीक्षा एवं दृष्टांतों सहित)

विपश्यना विशोधन विन्यास

तिक-पट्ठान

(संक्षिप्त रूपरेखा)

.....

[मूल पालि, भाषानुवाद, समीक्षा एवं दृष्टांतों सहित]

.....

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

तिक-पट्ठान

अनुक्रमणिका

अध्याय विषय पृष्ठ संख्या

१. प्राक्कथन.....[v]
२. प्रत्ययों का परिचय[पच्चयुद्देसो] .....[ix]
३. प्रत्ययों का विश्लेषण[पच्चयनिद्देसो] १

.....

परिशिष्ट

(१). प्रतीत्यसमुत्पाद[पटिच्चसमुप्पाद] ४२
(२). प्रत्ययों के दृष्टांत.....४४

विपश्यना साहित्य ५०
विपश्यना साधना के केंद्र.....५३

प्राक्कथन

यह प्रायःकर सर्वविदित है कि भगवान बुद्ध की शिक्षा नीचे अंकित तीन पिटकों में सुरक्षित है:

(१) विनयपिटक,

(२) सुत्तपिटक, तथा

(३) अभिधम्मपिटक।

'विनयपिटक' में मुख्यतया भिक्षुओं तथा भिक्षुणियों द्वारा पालन किये जाने वाले नियमों का विधान है, भले ही इसमें अन्य प्रकार की महत्त्वपूर्ण सामग्री भी प्रचुर मात्रा में पायी जाती है। 'सुत्तपिटक' में सर्वसाधारण के लिए सारगर्भित उपदेशों का समावेश है। 'अभिधम्मपिटक' में साधना में काफी आगे बढ़े हुए साधकों के लिए भगवान के अति गहन उपदेशों का संग्रह है।

'अभिधम्मपिटक' के अंतर्गत सात ग्रंथों की गणना की जाती है जिन्हें 'प्रकरण-ग्रंथ' कहते हैं। इनके नाम इस प्रकार हैं:

१. धम्मसङ्गणि,

२. विभङ्ग,

३. धातु-कथा,

४. पुग्गल-पञ्ञत्ति,

५. कथावत्थु,

६. यमक तथा

७. पट्ठान।

इनमें से 'पट्ठान' को 'महा-पकरण' भी कहते हैं जिसका अर्थ होता है 'महा-ग्रंथ', अर्थात विशालकाय ग्रंथ। इनमें नाम और रूप के चौबीस प्रकार के कार्य-कारण-भाव की चर्चा करते हुए यह बतलाया गया है कि केवल 'निर्वाण' ही असंस्कृत (=अनिर्मित) है, बाकी सभी धर्म संस्कृत (=निर्मित) हैं। अन्य शब्दों में, विश्व के सभी पदार्थों का अस्तित्व सापेक्ष है। केवल निर्वाण ही ऐसा

है जो निरपेक्ष सत्य है, अर्थात पूर्वोक्त चौबीस प्रकार के संबंधों की अपेक्षा नहीं रखता। विद्वानों ने स्वीकार किया है कि ये चौबीस संबंध हमारे ज्ञान कोश की वृद्धि के लिए अभिधम्म की एक महत्त्व पूर्ण देन है। 'पट्ठानपालि' का प्रथम भाग 'तिकपट्ठान' से आरंभ होता है। उसी को ध्यान में रखते हुए यह निबंध तैयार किया गया है।

ꕥ

भगवान को जब सम्यक संबोधि प्राप्त हुई तब बारह कड़ियों वाला 'प्रतीत्यसमुत्पाद' (देखिये परिशिष्ट १) बिल्कुल स्पष्ट होकर उनके सामने आया। इससे यह ज्ञान जागा कि यह होने से यह होगा, यह होने से यह होगा, और इस वजह से जो यह होता है, अगले होने में वह कारण बन जायगा – इस तरह 'कारण-कार्य', 'कारण-कार्य', 'कारण-कार्य' की जो शृंखला उन्होंने देखी, उससे उन्हें बुद्धत्व प्राप्त हुआ। फिर उसके बाद सात सप्ताह तक वे इस धर्म-रस में ही निमग्न रहे और तब उन्हें सर्वज्ञता प्राप्त हो गयी।

'सर्वज्ञता' के बारे में बहुत से लोगों के मन में बड़ी भ्रांति बनी रहती है। सर्वज्ञता का अर्थ यह नहीं होता कि 'सर्वज्ञ' को हर क्षण हर बात मालूम रहे। यह तो कालांतर में एक पागलपन की-सी बात चल पड़ी। वस्तुस्थिति तो यह है कि ऐसा व्यक्ति जिस विषय को जानना चाहता है उसे ध्यान में लाते ही उसकी सारी सच्चाई जान जाता है और उसके बारे में उसके लिए कुछ भी अनजाना नहीं रह जाता। 'सर्वज्ञता' को इसी परिप्रेक्ष्य में समझना होता है।

पूर्व में उल्लेख-प्राप्त सात सप्ताहों में संबोधिप्राप्त ने यह किया कि टुकड़े कर-कर के, विभाजन कर-कर के, विष्लेषण कर-कर के, विघटन कर-कर के, यह प्रकृति का रहस्य, यह ऋत, यह क्या काम करता है, कैसे काम करता है – सारी बात समझ ली। उसके और विवरण में जाते हुए चौथे सप्ताह उनके समक्ष 'पट्ठान' प्रकट हुआ। ओह! यह होने से यह होता है; यह होने से यह होता है; यह होने से ……। जो बारह कड़ियां प्रतीत्यसमुत्पाद की थीं, पट्ठान तक आते-आते, और टुकड़े होते-होते उनकी संख्या चौबीस तक पहुँच गयी।

इन चौबीस कड़ियों के जो विवरण हैं उनकी गहराई में जाने पर मन में यह विचार कौंधने लगता है कि धरती पर कैसे अनोखे व्यक्ति ने जन्म लिया होगा जिससे सृष्टि का कोई भी रहस्य अनजाना नहीं रहा! वह ऋत को, धर्म को

इनकी गहनतम गहराइयों तक समझ गया। इन गहराइयों तक जाने के लिए हर व्यक्ति को सच्चाई को अनुभूति पर उतारना आवश्यक होता है। तभी यह सब कुछ भली प्रकार समझ में आता है। लेकिन फिर भी कार्य-कारण की जो बारह कड़ियां चौबीस बनीं, वे किस मायने में बनीं, किस तरह से बनीं, उसकी मात्र रूपरेखा इस निबंध में प्रस्तुत की जा रही है।

ये चौबीस कड़ियां चौबीस 'प्रत्यय' (पालि - 'पच्चय') कहलाते हैं। इनका नाम-निर्देशन अगले परिच्छेद में किया गया है।

अब यह जिज्ञासा जागना स्वाभाविक ही है कि आखिर ये 'प्रत्यय' हैं क्या?

ये हैं 'पट्ठान' ।

'प' एक उपसर्ग है जिसका आशय 'प्रत्यय' से लिया जाना चाहिए। 'ठान' कहते हैं 'स्थान' को। इस प्रकार 'पट्ठान' से अभिप्राय है – 'प्रत्ययों का स्थान'। यह कारण और कार्य की सच्चाई को जानने की एक भूमि है। इसमें हम जितने गहरे जाते हैं उतने ही रत्न निकलते जाते हैं। ऐसी रत्नगर्भा वसुंधरा है यह 'पट्ठान'!

प्रतीत्यसमुत्पाद में कहा जाता है 'अविज्जापच्चयासङ्खारा' – अविद्या के प्रत्यय से संस्कार बनते हैं। प्रत्यय, माने कारण । अविद्या होगी तो उसके कारण से संस्कार बनेंगे। इस प्रकार 'प्रत्यय' का अस्तित्व सामने आता है। फिर प्रत्यय से क्या बना, क्या उत्पन्न हुआ? इस प्रत्यय से जो उत्पन्न हुआ, उसे 'प्रत्ययोत्पन्न' (पालि – 'पच्चयुप्पन्न') कहा। 'पट्ठान' का पाठ करते समय यह जो बार-बार श्रवणगोचर होता है – 'पच्चयेन पच्चयो, पच्चयेन पच्चयो' उससे मन में जिज्ञासा जागती है कि क्या है 'पच्चयेन पच्चयो'? तो इस संबंध में यह समझना होता है कि इस प्रत्यय से यह प्रत्ययोत्पन्न होता है; इस प्रत्यय से यह प्रत्ययोत्पन्न होता है; आदि आदि।

इस निबंध के परिशिष्ट (२) में हर 'प्रत्यय' (पालि - 'पच्चय') के दृष्टांत प्रस्तुत किये गये हैं। उनमें विभिन्न प्रत्ययों के 'प्रत्ययोत्पन्न-धर्म' (पालि – 'पच्चयुप्पन्न-धम्म') और 'प्रत्यय-धर्म' (पच्चय-धम्म) (जिनसे ये

प्रत्ययोत्पन्न-धर्म निष्पन्न होते हैं) दर्शाये गये हैं। उदाहरण स्वरूप, चक्षु-विज्ञान चक्षु के होने पर ही जागता है। इनमें चक्षु-विज्ञान 'प्रत्ययोत्पन्न-धर्म' और चक्षु 'प्रत्यय-धर्म' कहलायगा और दोनों के मध्य संबंध बैठाने वाले 'प्रत्यय' की संज्ञा होगी – इंद्रिय।

विपश्यना विशोधन विन्यास